8

पत्थर का इतिहास

पाठ-प्रवेश

इस संसार का प्रत्येक जीव-जंतु अपनी आयु पूरी कर यहाँ से चला जाता है किंतु इस प्रकृति में यहाँ-वहाँ अपने निशान छोड़ जाता है। हम बहुत-सी बातें पुस्तकों द्वारा जान पाते हैं किंतु जब पुस्तकें नहीं ईजाद हुई थीं तब का हाल कैसे जाना जाए? हमारे आसपास के पेड़, पत्थर, मिट्टी आदि हमें सब कुछ बता देते हैं।

आनंद भवन
इलाहाबाद

प्रिय इंदु

जब तुम मेरे साथ रहती हो तो अकसर मुझसे बहुत-सी बातें पूछा करती हो और मैं उनका जवाब देने की कोशिश करता हूँ लेकिन अब, जब तुम मसूरी में हो और मैं इलाहाबाद में, हम दोनों उस तरह बात नहीं कर सकते। इसलिए मैंने इरादा किया है कि कभी-कभी तुम्हें इस दुनिया की और उन छोटे-बड़े देशों की, जो इस दुनिया में हैं, छोटी-छोटी कथाएँ लिखा करूँगा।

तुमने हिंदुस्तान और इंग्लैंड का कुछ हाल इतिहास में पढ़ा है लेकिन इंग्लैंड केवल एक छोटा-सा टापू है और हिंदुस्तान जो एक बहुत बड़ा देश है फिर भी दुनिया का एक छोटा-सा हिस्सा है। अगर तुम्हें इस दुनिया का हाल जानने का शौक है, तो तुम्हें सब देशों का और उन सब जातियों का, जो इसमें बसी हुई हैं, ध्यान रखना पड़ेगा, केवल उस एक छोटे से देश का नहीं, जिसमें तुम पैदा हुई हो।

तुम इतिहास किताबों में ही पढ़ सकती हो, लेकिन पुराने ज़माने में तो आदमी पैदा ही नहीं हुआ था, किताबें कौन लिखता? तब हमें उस ज़माने की बातें कैसे मालूम हों? उस पुराने ज़माने की लिखी हुई किताबें न होने पर भी कुछ ऐसी चीज़ें हैं, जिनसे हमें उतनी ही बातें मालूम होती हैं, जितनी किसी किताब में होतीं। ये पहाड़, समुद्र, नदियाँ, जंगल, जानवरों की पुरानी हड्डियाँ और इसी तरह की और भी कितनी चीज़ें हैं, जिनसे हमें दुनिया का पुराना हाल मालूम हो सकता है। मगर हाल जानने का असली तरीका यह नहीं है कि हम केवल दूसरों की लिखी किताबें पढ़ लें बल्कि खुद संसार-रूपी पुस्तक को पढ़ें। मुझे आशा है कि पत्थरों और पहाड़ों को पढ़कर तुम थोड़े ही दिनों में उनका हाल जानना सीख जाओगी।

सोचो, कितने मज़े की बात है। एक छोटा-सा रोड़ा, जिसे तुम सड़क पर या पहाड़ के नीचे पड़ा हुआ

शब्दार्थ

इरादा—इच्छा, प्रयोजन

Scanned with CamScanner

देखती हो, शायद संसार की पुस्तक का छोटा-सा पृष्ठ हो, शायद उससे तुम्हें कोई नई बात मालूम हो जाए। शर्त यही है कि तुम्हें उसे पढ़ना आता हो। कोई ज़बान, उर्दू, हिंदी, अँगरेज़ी सीखने के लिए तुम्हें उसके अक्षर सीखने होते हैं। इसी तरह पहले तुम्हें प्रकृति के अक्षर पढ़ने पड़ेंगे, तभी तुम उसकी कहानी उसके पत्थरों और चट्टानों की किताब से पढ़ सकोगी। शायद अब भी तुम उसे थोड़ा-थोड़ा पढ़ना जानती हो। जब तुम कोई छोटा-सा गोल चमकीला रोड़ा देखती हो तो क्या वह तुम्हें कुछ नहीं बतलाता? यह कैसे गोल, चिकना और चमकीला हो गया और उसके खुरदरे किनारे या कोने क्या हुए? अगर तुम किसी बड़ी चट्टान को तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर डालो, तो हर एक टुकड़ा खुरदरा और नुकीला होगा। वह चिकने रोड़े की तरह बिलकुल नहीं होता। फिर यह रोड़ा कैसे इतना चमकीला, चिकना और गोल हो गया?

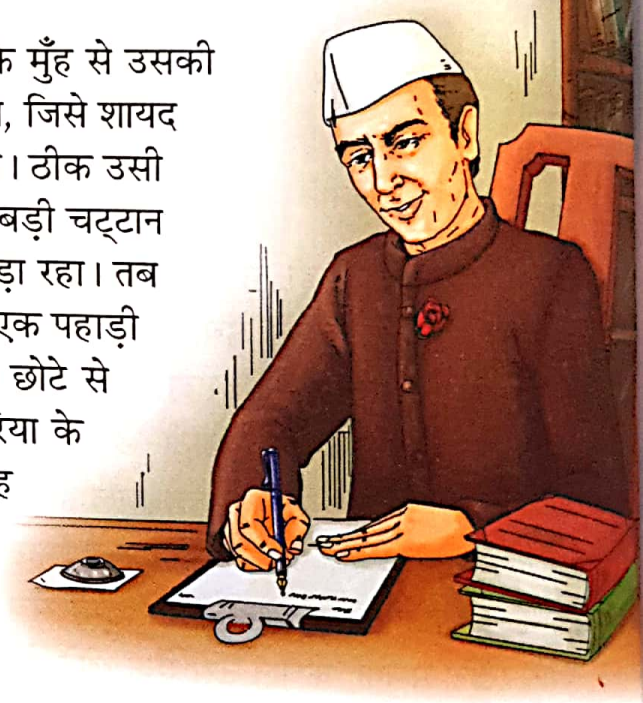

अगर तुम्हारी आँखें देखें और कान सुनें, तो तुम रोड़े के मुँह से उसकी कहानी सुन सकती हो। वह तुमसे कहेगा कि एक समय, जिसे शायद बहुत दिन गुज़रे हों, वह भी एक चट्टान का टुकड़ा था। ठीक उसी टुकड़े की तरह, उसके किनारे और कोने थे, जिसे तुम बड़ी चट्टान से तोड़ती हो। शायद वह किसी पहाड़ के दामन में पड़ा रहा। तब पानी आया और उसे छोटी घाटी तक ले गया। वहाँ से एक पहाड़ी नाले ने उसे एक छोटे से दरिया में पहुँचा दिया। इस छोटे से दरिया से वह बड़े दरिया में पहुँचा। इस बीच वह दरिया के पेंदे में लुढ़कता रहा। उसके किनारे घिस गए और वह चिकना और चमकदार हो गया। इस तरह वह कंकड़ बना, जो तुम्हारे सामने है। किसी वजह से दरिया उसे छोड़ गया और तुम उसे पा गईं। अगर दरिया उसे और आगे ले जाता, तो वह छोटा होते-होते अंत में बालू का ज़र्रा हो जाता। वह समुद्र के किनारे जा अपने भाइयों से जा मिलता, जहाँ एक सुंदर बालू का किनारा बन जाता, जिस पर छोटे-छोटे बच्चे खेलते और बालू के घरौंदे बनाते। अगर एक छोटा-सा रोड़ा तुम्हें इतनी बातें बता सकता है, तो ज़रा सोचो, पहाड़ों और दूसरी चीज़ों से, जो हमारे चारों तरफ़ हैं, हमें और कितनी बातें मालूम हो सकती हैं।

तुम्हारा पिता

जवाहर

शब्दार्थ

खुरदरा—दानेदार; **दरिया**—नदी; **पेंदा**—तल;
ज़र्रा—बालू का कण; **रोड़ा**—पत्थर का टुकड़ा

Scanned with CamSca